REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249.894X
VOLUME . 7 | ISSUE . 10 | JULY . 2018

मध्य प्रदेश एवं सीमावर्ती राज्यों मे वर्ष 2011–12 एवं 2014–15 में उच्च शिक्षा संस्थानों में विकास दर का अध्ययन

मनीष तिवारी[1] , सरोज जुनघरे[2]
[1]संगणक विज्ञान विभाग , संत अलायसियस महाविद्यालय (स्वशासी.) जबलपुर,मप्र, भारत.
[2]संगणक विज्ञान विभाग , संत अलायसियस महाविद्यालय (स्वशासी.) जबलपुर,मप्र, भारत.

Abstract—

उच्च शिक्षा परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवर्तन सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिक एवं निजि उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये आवश्यक होता है। विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान एवं विस्तार कार्य करने कि लिये राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच देते है। पिछले कुछ वर्षो में भारत में उच्च शिक्षण प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों की संख्या में विशाल वृद्धि हुई है। यह शोध पत्र मध्यप्रदेश एवं सीमावर्ती राज्यों में उच्च शिक्षण संस्थानों के विकास एवं उनकी वर्तमान स्थिति को दर्शाता है।

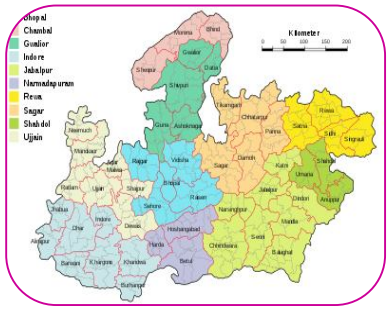

Keywords—*Higher Education; University; Madhya Pradesh; India;* *उच्च शिक्षा; विश्वविद्यालय; मध्यप्रदेश; भारत;*

Introduction

शिक्षा के महत्व का वर्णन करते हुऐ आचार्य चाणक्य ने कहा था ''शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है, एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा सुंदरता एवं यौवन को भी परास्त कर देती है''। आचार्य चाणक्य ने तो यहां तक कहा था यदि माता पिता सन्तान को शिक्षित नही करते है तो वे उसके सबसे बडे शत्रु है।

भारत विश्व में शिक्षा का बडा केंद्र रहा है। अरब अक्राताओं के आने के पश्चात् भारतीय शिक्षा में बहुत सी विकृति आई, शिक्षण सस्थानों को तहस नहस किया गया। तत्पश्चात् अंग्रजो के आने पर, उन्होने शिक्षा के मूल उद्देश्यों को परिवर्तित किया एवं शिक्षा कि गुणवत्ता में गिरावट आ गई है। स्वतंत्रता के उपरान्त भारतीय शिक्षाविदों एवं सत्ता में रहे लोगो का प्रयास रहा कि किस प्रकार हम भारतीय शिक्षण संस्थानों एवं इनकी गुणवत्ता को बढाया जाये। उद्देश्य की पूर्ति हेतु बहुत से आयामों को भारत के सभी प्रदेशों में प्रारंभ किया।

स्वतंत्रता के पूर्व मध्य भारत में उच्च शिक्षा की स्थिति सराहनीय नही थी। मप्र (मध्यप्रदेश) में मात्र सागर विवि (विश्वविद्यालय) था। मप्र के महाविद्यालय आगरा एवं नागपुर विवि से संबंध थे [1]। मप्र गठन के पश्चात् कई सारे उच्च शिक्षण संस्थानो(उशिसं) की स्थापना की गई।

उशिसं में छात्रों का चहुमुखी विकास होता है। यही छात्र देश की उन्नति में योगदान देते है। इन केद्रों की सहायता से स्वयं की प्रतिभा को सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, व्यापारिक एवं

शैक्षणिक आदि मंचों पर रखता है। किसी राष्ट्र, प्रदेश या क्षेत्र का विकास, वहॉ स्थित शिक्षण स्थानों की संख्या एवं गुणवत्ता में निहित होता है। भारत में २०११–१२ में उशिसं की संख्या ६४२ थी एवं २०१४–१५ में बढकर यह ७६० हो गई है। इन चार वर्षो में यह गति १६.८३३ की है। क्या यह विकास भविष्य में भारत कीं उच्च शिक्षा की आवश्यकताओ को पूरा कर पाएगा? इस प्रकार के प्रश्न भारतीय शिक्षाविदो, शिक्षको एवं समान्य नागरिकों के मध्य कौतुहल मचाते है।

वर्तमान भारत में कुछ उशिसं में उच्च गुणवत्ता एवं मानदण्डो को प्राप्त किया है। परंतु अधिकतर संस्थानों की गुणवत्ता का स्तर बहुत ही निम्न है।

इस शोध पत्र में मप्र एवं इसके पांच सीमावर्ती राज्य उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ एवं गुजरात में शिक्षण संस्थानों की संख्या, प्रकार एवं २०११–१२ एवं २०१४–१५ के अंतराल में विकास का अध्ययन किया है। वर्तमान परिस्थिति में उशिसं में छात्रों की संख्या का दवाब बढा है तथा स्वतंत्रता के ७० वर्षो के बाद भी पिछडे क्षेत्रों में उच्च शिक्षा पहुँच नही बन पाई है।

Previous Related Work

वर्ष २०१० में हायर एजुकेशन एण्ड रिसर्च इन इंडिया शीर्षक के साथ प्रकाशित शोध पत्र में वंदना सक्सेना, संजय कुलश्रेष्ठ, एवं बाली खान ने बताया, विकासशील देशों, अमेरिका एवं यूके में उच्च शिक्षा स्थिति को संक्षेप में विवरण किया तथा भारत में शोध से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं को चिन्हित किया है[3]।

दीप्ती गुप्ता एवं नवनीत गुप्ता ने वर्ष २०१२ में हायर एजुकेशन इन इंडियाः स्ट्रक्चर, स्टेटिस्टिकल, चालेजेस शोध पत्र में बताया कि अगले आने वाले वर्षो में हमें किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना होगा [4]।

डॉ के.एम. जोशी एवं डॉ किंजल विजय अहीर ने २०१३ में इंडियन हायर एजुकेशनःसम रिफलेशन शीर्षक के अंतर्गत शोध पत्र प्रकाशित किया, उन्होने भारत में उशिसं की शासन प्रणाली, संस्थानों पहुँच, निजिकरण,अर्थ व्यवस्था, क्षमता एवं गुणवत्ता आदि विषयों पर प्रकाश डाला है [2]।

Data, Method and Tool

अ. आंकडे

एकत्रीकरण करने के आधार पर आंकडों को वर्गीकृत किया जाये तो यह दो प्रकार का होता है, प्राथमिक आंकडे एवं सहायक या गौण आंकडे। प्राथमिक आंकडे शोधकर्ता द्वारा स्वतः एकत्रित किये जाते है जबकि सहायक आंकडे किसी अन्य शोधकर्ता या संस्था द्वारा एकत्रित किये जाते है। सहायक आंकडे एक बार या इससे अधिक बार सांख्यिकीय प्रक्रिया से होकर गुजर चुके होते है [5]।

हमारे शोध पत्र में विश्लेषण के लिऐ सहायक आंकडो का प्रयोग किया गया है। यह आंकडे हमने मानव संसाधन विकास मंत्रालय की वेब पोर्टल के पेज अखिल भारतीय उच्चर शिक्षा सर्वेक्षण की से लिया हैं। हमने ये आंकडे वर्ष २०११–१२ एवं २०१४–१५ की विवरर्णी (रिपोर्ट) से लिया है[6][7]। यह विवरर्णी हमें माइक्रो साफ्ट एक्सेल फाईल में प्राप्त हुई है।

वर्ष २०११–१२ की विवरर्णी में सस्थानों को ग्यारह जबकि वर्ष २०१४–१५ में सस्थानों को बारह भागों में वर्गीकृत किया गया है। यह वर्गीकरण निम्न हैः

- केन्द्रीय विश्वविद्यालय (सेंट्रल यूनिवर्सिटि)
- केंद्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (सेंट्रल ओपन यूनिवर्सिटि)
- राष्ट्रीय महत्व के सस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ नेशनल इंर्पोटेंस)
- विधान मण्डल अधिनियम कें अंतर्गत संस्थान (इंस्टीट्यूट अंडर स्टेट लेजिस्लेचर एक्ट)
- लोक राज्य विश्वविद्यालय (स्टेट पब्लिक यूनिवर्सिटि)

- राज्य मुक्त विश्वविद्यालय (स्टेट ओपन यूनिवर्सिटि)
- राज्य निजि विश्वविद्यालय (स्टेट प्रायवेट यूनिवर्सिटि)
- राज्य मुक्त निजि विश्वविद्यालय (प्रायवेट ओपन प्रायवेट यूनिवर्सिटि)
- शासकीय डीम्ड विश्वविद्यालय (गवरमेंट डीम्ड यूनिवर्सिटि)
- शासकीय सहायता प्राप्त डीम्ड विश्वविद्यालय (गवरमेंट सहायता प्राप्त डीम्ड यूनिवर्सिटि)
- निजि डीम्ड विश्वविद्यालय (प्रायवेट डीम्ड यूनिवर्सिटि)
- अन्य

वर्ष २०१४-१५ राज्य निजि मुक्त विवि (स्टेट प्रायवेट ओपन यूनिवर्सिटी) नाम का नया वर्ग जोडा गया है[6][7]।

ब. विधि

इस शोधपत्र में हमने विश्लेषणात्मक एवं संख्यात्मक शोध विधियों का प्रयोग किया है। विश्लेषणात्मक शोध विधि में पहले से उपलब्ध आंकडों का अध्ययन किया जाता है एवं अध्ययन के आधार पर हम आंकडों के सूक्ष्म गुणदोषों को पटल पर रखा जाता है[5]। संख्यात्मक शोध में उपलब्ध राशियों या मानों की तुलना या अध्ययन करते है इस शोध में आंकडों सारणी में रूप में व्यवस्थित करतें है[5]। संख्यात्मक शोध विधि में जांच विधि परिणाम नियार्णक और समान्यतः वर्णात्मक स्वरूप में होता है[8]।

स. सॉफटवेयर यंत्र – माइक्रोसाफट एक्सेल

माइक्रोसाफट एक्सेल इलेक्ट्रांनिक स्प्रेडशीट साफटवेयर है। इसमें आंकडो को तालिका के रूप में संग्रहित किया जाता है। साफटवेयर में उपलब्ध सूत्रों को गणना, आंकडो का अध्ययन करने के लिये ग्राफ आदि बहुत सी सुविधाओं का प्रयोग कर सकते है। इस शोध पत्र में ग्राफ, तालिका एवं गणनाओ को इसी साफटवेयर से संसाधित किया गया हैख६,।

Analysis

यह सारणी मध्य प्रदेश एवं सीमावर्ती राज्यों में वर्ष २०११-१२ एवं २०१४-१५ के मध्य विकास दर का प्रतिशत प्रदशित कर रही है। इसमें हम स्पष्ट रूप से अवलोकन कर सकते है कि मध्य प्रदेश की विकास दर छत्तीसगढ से कम है। भारत की कुल औसत विकास दर १६. ३० है। जबकि म.प्र. की दर मात्र २ प्रतिशत अधिक है।

विकास दर की गणना के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया है:

$$\text{विकास दर} = (| \Delta V | / (\sum V/2)) * 100 = (| (V_1 - V_2) | / ((V_1 + V_2)/2)) * 100$$

तालिका–१ मप्र एवं सीमावर्ती राज्यों में उशिसं विकास दर

	मप्र एवं सीमावर्ती राज्यों में उशिसं विकास दर			
	राज्य	*2014-15*	*2011-12*	*प्रतिशत*
1	मध्य प्रदेश	41	33	21.62
2	छत्तीसगढ	22	17	25.64

	मप्र एवं सीमावर्ती राज्यों में उशिसं विकास दर			
	राज्य	*2014-15*	*2011-12*	*प्रतिशत*
3	गुजरात	29	38	25.28
4	महाराष्ट्र	45	44	2.24
5	राजस्थान	64	45	34.86
6	उत्तर प्रदेश	63	57	10.00
	कुल	284	234	

उपरोक्त तालिका–१, यह दर्शाता है कि वर्ष २०११–१२ में कुल उशिसं २३४ थे जबकि वर्ष २०१४–१५ में बढकर यह संख्या २८४ हो गई है। मप्र में वर्ष २०११–१२ में कुल ३३ उशिसं थे एवं वर्ष २०१४–१५ यह बढकर ४१ हो गई जो कि २१.६२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सबसे अधिक वृद्धि ३४.८६ प्रतिशत राजस्थान में दर्ज की गई एवं सबसे कम २.२४ दर महाराष्ट्र में रही है। जबकि छत्तीसगढ की विकास दर २५.६४ रही जो कि मप्र की विकास दर से लगभग ४ प्रतिशत अधिक है। उत्तर प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से भारत में सबसे बडा राज्य परन्तु उशिसं की विकास दर मात्र १० प्रतिशत है।

मप्र में वर्ष २०११–१२ में शिक्षक छात्र अनुपात २७ था जबकि २०१४–१५ में यह अनुपात बेहतर होकर २४ छात्र प्रति शिक्षक है। अतः शिक्षक छात्र अनुपात में ११.७६ की वृद्धि हुई है।

तालिका–२ मप्र में विभिन्न प्रकार के सस्थानों की विकास दर

	मप्र में विभिन्न प्रकार के सस्थानों की विकास दर			
	राज्य	*2014-15*	*2011-12*	*प्रतिशत*
1	केन्द्रीय विश्वविद्यालय	2	2	0
2	केंद्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	0	0	0
3	राष्ट्रीय महत्व के सस्थान	7	3	80
4	विधान मण्डल अधिनियम कें अंतर्गत संस्थान	0	0	0
5	लोक राज्य विश्वविद्यालय	17	16	6.06
6	राज्य मुक्त विश्वविद्यालय	1	1	0
7	राज्य निजि विश्वविद्यालय	13	7	60
8	राज्य मुक्त निजि	0	0	0

	मप्र में विभिन्न प्रकार के सस्थानों की विकास दर			
	राज्य	*2014-15*	*2011-12*	*प्रतिशत*
	विश्वविद्यालय			
9	शासकीय डीम्ड विश्वविद्यालय	3	1	100
10	शासकीय सहायता प्राप्त डीम्ड विश्वविद्यालय	0	0	0
11	निजि डीम्ड विश्वविद्यालय	0	0	0
12	अन्य	0	1	-200

उपरोक्त तालिका–२, यह दर्शाता है कि केवल मप्र में ही विभिन्न प्रकार के शिक्षण संस्थानों की संख्या में कितना विकास हुआ। इन छः राज्यों में एक भी केंद्रीय मुक्त विवि, राज्य मुक्त निजि विवि एवं अन्य वर्ग एक संस्थान नही है। मप्र मे इस वर्ग में वर्ष २०११–१२ में एक संस्थान है परंतु अब यह बंद हो चुका है।

राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों सभी छः राज्यो ंऔसत विकास दर ४४ प्रतिशत रही जबकि अकेले मप्र ने सबसे अधिक ८० प्रतिशत की विकास दर को प्राप्त किया है, मप्र मे ंसंस्थानों की संख्या ७ है।

विधान मण्डल अधिनियम कें अंतर्गत संस्थान, इस प्रकार का एक ही संस्थान छः राज्यों मे है जो कि उप्र मे ंहै। सभी छः राज्यों में एक ही मुक्त विवि है यह विवि मप्र में है।

सभी छः राज्यों मे पिछले अंतराल मे ंकोई भी केन्द्रीय विवि की स्थापना नही की गई है। राज्य लोक विवि में मप्र ने ६.०६ की विकास दर प्राप्त की है हमारी विकास दर छः राज्यों में पाचवे स्थान पर रही है एव ंप्रथम स्थान पर राजस्थान रहा जिसकी विकास ३० प्रतिशत रही।

राज्य निजि विवि ने ६० प्रतिशत की गति से इन चार वर्षो में प्रगति की है। जबकि महाराष्ट्र में इस अंतराल में कोई भी इस वर्ग का कोई संस्थान स्थापित नही हुआ है। मप्र में शासकीय डीम्ड विवि की विकास दर सबसे अधिक १०० प्रतिशत रही।

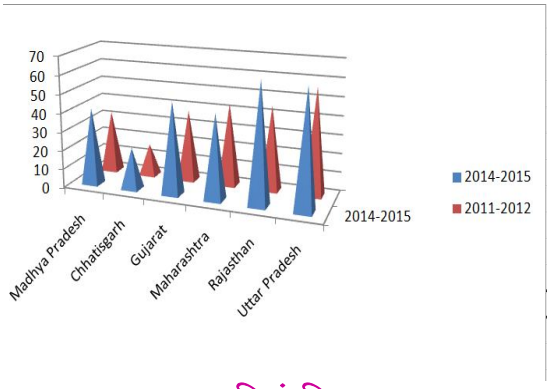

ग्राफ–१ उशिसं विकास दर

तालिका–१ के विकास दर के आंकडो को ग्राफ के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

Conclusion

इस शोध से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मप्र में उशसं की संख्या में वुद्धि तो अंकित की गई है परंतु उशसं की विकास गति एवं जनसंख्या के अनुपात में संतुलन नहीं है विभिन्न प्रकार के उच्च गुणवत्ता युक्त संस्थानों की स्थापना की आवश्यकता है।

REFERENCES

[1] Tripathi, Satya Deo, and Ponmudiraj, B. S.,"State-wise Analysis of Accreditation Reports - Madhya Pradesh", National Assessment And Academic Council, Bangalore, pp. 4-5, 2005.

[2] Joshi, Dr. K.M., and Ahir, Dr. Kinjal Vijay, "Indian Higher Education:Some Reflections", Intellectual Economics,2013,Vol. 7, No. 1(15), pp. 42-53.

[3] Saxena, Vandana, and Kulsrestha, Sanjay, and Khan, Bali,"Higher Education and Research in India", International Journal of Education, Research and Technology, Vol[1] 1, June 2010, pp. 91-98.

[4] Gupta, Deepti, and Gupta, Navneet,"Higher Education in India: Structure, Statistical and Challenges", Journal of Education and Practice, Vol. 3, No 2, pp.17-24.

[5] Kothari, C. R.,"Research Methodoly, Methods and Technology", New Age International Publishers,Revised Second Edition, 1990, pp. 95-96.

[6] AISHE Final Report 2011-12, http://aishe.nic.in/aishe/reports, Dt. 18/10/2016, Time: 9.34.

[7] AISHE Final Report 2014-15, http://aishe.nic.in/aishe/reports, Dt. 18/10/2016, Time: 9.40.

[8] http://www.snapsurveys.com/qualitative-quantitative-research/, dt: 19/10/2016, Time: 11:05 AM.

[9] http://spreadsheets.about.com/od/excelformulas/ss/What-is-Microsoft-Excel-and-What-Would-I-Use-it-for.htm, dt: 19/10/2016, Time: 11:20 AM.